मधुबन ओम् शान्ति अंक 329 दिसम्बर 2019

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(12-11-19)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा रूहानियत में रह अपनी श्रेष्ठ वृत्तियों द्वारा शक्तिशाली वायुमण्डल बनाने वाले, स्व कल्याणी सो विश्व कल्याणकारी आत्मायें, निमित्त बेहद सेवाधारी टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - अभी तो मधुबन बेहद घर में चारों ओर से देश विदेश के भाई बहिनों की बहुत अच्छी रिमझिम लगी हुई है। सभी प्यारे बापदादा के घर में अव्यक्ति, अलौकिक अनुभूतियां करने भाग-भाग कर आते और खूब रिफ्रेश होकर जाते हैं। बापदादा भी वतन से अपने बच्चों को हर प्रकार की दिव्य पालना का अनुभव करा रहे हैं। बाबा के अवतरण दिन पर बहुत सुन्दर शक्तिशाली वायुमण्डल बन जाता है। प्यारे बाबा के अव्यक्त महावाक्य एक नया होमवर्क दे देते हैं। जैसे पिछली मुरली में बापदादा ने विशेष होमवर्क दिया बच्चे, सदा सबको दुआयें दो, दुआयें लो। सदा अपनी श्रेष्ठ वृत्तियों से शक्तिशाली वायुमण्डल बनाओ। साथ-साथ 5 स्वरूपों की ड्रिल करते अपने मन को शक्तिशाली बनाते चलो। तो जरूर आप सभी इस मिले हुए होमवर्क अनुसार बहुत अच्छा पुरुषार्थ कर रहे होंगे!

जैसी हमारी भावना होती है उसी अनुसार हमारी दृष्टि, वृत्ति होती है। जितना हम रूहानियत में रहते हैं उतना हल्के वा सरल रहते हैं, इससे स्वत: सेवा में सहयोगी बन जाते हैं। अभी हमारे पुरुषार्थ की पर्सनैलिटी में रीयल्टी और रॉयल्टी ऐसी हो जो बाबा का नाम रोशन हो जाए।

बाबा कहते बच्चे, सदा यही ध्यान रहे कि एक बल एक भरोसा, एक तेरा सहारा.... दुनिया में रहते हुए, सब सम्बन्ध में रहते हुए, इन्सान का सहारा नहीं पकड़ना है, परन्तु कोई भी बिल्डिंग पिल्लर के बिना नहीं बनती है, हम कहें ऐसे ही छत पड़ जाये, यह दीवारें बन जाये, तो नहीं बनेगा, थोड़ा समय के लिए पिल्लर लगाने पड़ते हैं। हाँ, एक बार छत पड़ गई, दीवारें बना ली तो फिर उस पिल्लर को निकाल देते हैं। तो सिर्फ इतना सहारा वा सहयोग किसी को देना या लेना है, योगी सो सहयोगी बनकर रहना है लेकिन इसका मतलब उसको अधीन नहीं बना देना है। यही भावना है कि बाबा के सब बच्चे इतने शानदार बन जायें जो फरिश्तों की महफिल लग जाये, कहीं पर भी बुद्धि लटकी अटकी न हो। बाबा ने जो वैल्युज़ सिखाई हैं, वह सब हमारे जीवन में हों तो सेवा अपने आप होती है। बाबा वा परिवार जो हमें दे रहा है, उसका कदर रखना है। सहयोगी बनने बनाने की भावना रखनी है, इसमें जरा भी बॉडी-कॉन्सेस की अंश न हो, तब ईश्वरीय सन्तान का नशा रहेगा। कोई भी घड़ी ऐसी न आये जो मैं अपसेट हो जाऊं या मेरे से कोई अपसेट हो जाये, इसके लिए अपने स्वमान की सीट पर सदा सेट रहने का बहुत अच्छा अभ्यास चाहिए। इसी से सुख मिलता इलाही है। बाबा की ऐसी बातें जब हम प्रैक्टिकल लाइफ में लाते हैं तो भगवान को भी देखकर खुशी होती है। बाबा की उम्मीदों ने हमारी बहुत उन्नति की है, बहुत आगे बढ़ाया है। तो जो भी कुछ कमी है वह अब न रहे, तब बाबा की बहुत ही प्यार भरी दुआयें मिलेंगी।

इस अलौकिक जन्म में जो पाया है, कल्प-कल्प हमारा हक लगता है पाने का, तो आप सभी भी ऐसे खुशी में नाचो, सुपात्र बच्चा बनो। जैसे बाबा चलाये वैसे चलते चलो, उसमें कोई मनमत या परमत मिक्स न होने पाये। ऐसी बाबा की मीठी शिक्षायें हमारे जीवन में हो तो यह शिक्षायें ही हमारी रक्षा करती रहेंगी। यही परमात्म प्यार की शक्ति मायाजीत, विकर्माजीत, कर्मातीत बना देगी।

बोलो, ऐसा अनुभव है ना! अच्छा -आप सभी का स्वास्थ्य ठीक होगा। सभी बाबा की यादों में समाते हुए बेहद सेवायें करते चलो। सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

“रूहानी पर्सनैलिटी द्वारा सेवा करो”

1) आप ब्राह्मणों जैसी रूहानी पर्सनैलिटी सारे कल्प में और किसी की भी नहीं है क्योंकि आप सबकी पर्सनैलिटी बनाने वाला ऊंचे ते ऊंचा स्वयं परम आत्मा है। आपकी सबसे बड़े ते बड़ी पर्सनैलिटी है - **स्वप्न वा संकल्प में भी सम्पूर्ण प्युरिटी**। इस प्युरिटी के साथ-साथ चेहरे और चलन में रूहानियत की भी पर्सनैलिटी है - अपनी इस पर्सनैलिटी में सदा स्थित रहो तो सेवा स्वत: होगी।

2) कोई कैसी भी परेशान, अशान्त आत्मा हो आपकी रूहानी पर्सनैलिटी की झलक, प्रसन्नता की नज़र उन्हें प्रसन्न कर देगी। नज़र से निहाल हो जायेंगे। अभी समय की समीपता के अनुसार नज़र से निहाल करने की सेवा करने का समय है। आपकी एक नज़र से वह प्रसन्नचित हो जायेंगे, दिल की आश पूर्ण हो जायेगी।

3) जैसे ब्रह्मा बाप के सूरत वा सीरत की पर्सनैलिटी थी तब आप सब आकर्षित हुए, ऐसे फालो फादर करो। सर्व प्राप्तियों की लिस्ट बुद्धि में इमर्ज रखो तो चेहरे और चलन में प्रसन्नता की पर्सनैलिटी दिखाई देगी और यह पर्सनैलिटी हर एक को आकर्षित करेगी।

4) रूहानी पर्सनैलिटी द्वारा सेवा करने के लिए अपनी मूड सदा चियरफुल और केयरफुल रखो। मूड बदलनी नहीं चाहिए। कारण कुछ भी हो, उस कारण का निवारण करो। सदा प्रसन्नता की पर्सनैलिटी में रहो। प्रसन्नचित्त रहने से बहुत अच्छे अनुभव करेंगे। प्रसन्नचित आत्मा के संग में रहना, उनसे बात करना, बैठना सबको अच्छा लगता है। तो लक्ष्य रखो कि प्रश्नचित्त नहीं, प्रसन्नचित्त रहना है।

5) आप बच्चे बाहर के रूप में भल साधारण पर्सनैलिटी वाले हो लेकिन रुहानी पर्सनैलिटी में सबसे नम्बरवन हो। आपके चेहरे पर, चलन में प्योरिटी की पर्सनैलिटी है। जितना-जितना जो प्योर है उतनी उनकी पर्सनैलिटी न सिर्फ दिखाई देती है लेकिन अनुभव होती है और वह पर्सनैलिटी ही सेवा करती है।

6) जो ऊंची पर्सनैलिटी वाले होते हैं उसकी कहाँ भी, किसी में भी आंख नहीं जाती क्योंकि वह सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न हैं। वे कभी अपने प्राप्तियों के भण्डार में कोई अप्राप्ति अनुभव नहीं करते। वह सदा मन से भरपूर होने के कारण सन्तुष्ट रहते हैं, ऐसी सन्तुष्ट आत्मा ही दूसरों को सन्तुष्ट कर सकती है।

7) जितनी पवित्रता है उतनी ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी है, अगर पवित्रता कम तो पर्सनैलिटी कम। ये प्योरिटी की पर्सनैलिटी सेवा में भी सहज सफलता दिलाती है। लेकिन यदि एक विकार भी अंश-मात्र है तो दूसरे साथी भी उसके साथ जरूर होंगे। जैसे पवित्रता का सुख-शान्ति से गहरा सम्बन्ध है, ऐसे अपवित्रता का भी पांच विकारों से गहरा सम्बन्ध है। इसलिए कोई भी विकार का अंश-मात्र न रहे तब कहेंगे पवित्रता की पर्सनैलिटी द्वारा सेवा करने वाले।

8) आजकल दो प्रकार की पर्सनैलिटी गाई जाती है – एक शारीरिक पर्सनैलिटी, दूसरी पोजीशन की पर्सनैलिटी। ब्राह्मण जीवन में जिस ब्राह्मण आत्मा में सन्तुष्टता की महानता है – उनकी सूरत में, उनके चेहरे में भी सन्तुष्टता और श्रेष्ठ स्थिति के पोजीशन की पर्सनैलिटी दिखाई देती है।

9) जिनके नयन-चैन में, चेहरे में, चलन में सन्तुष्टता की पर्सनैलिटी दिखाई देती है वही तपस्वी हैं। उनका चित्त सदा प्रसन्न होगा, दिल-दिमाग सदा आराम में, सुख-चैन की स्थिति में होगा, कभी बेचैन नहीं होंगे। हर बोल और कर्म से, दृष्टि और वृत्ति से रूहानी पर्सनैलिटी और रॉयल्टी का अनुभव करायेंगे।

10) विशेष आत्माओं वा महान आत्माओं को देश की वा विश्व की पर्सनैलिटीज़ कहते हैं। पवित्रता की पर्सनैलिटी अर्थात् हर कर्म में महानता और विशेषता। रूहानी पर्सनैलिटी वाली आत्मायें अपनी इनर्जी, समय, संकल्प वेस्ट नहीं गँवाते, सफल करते हैं। ऐसी पर्सनैलिटी वाले कभी भी छोटी-छोटी बातों में अपने मन-बुद्धि को बिज़ी नहीं रखते हैं।

11) रूहानी पर्सनैलिटी वाली विशेष आत्माओं की दृष्टि, वृत्ति, बोल.. सबमें अलौकिकता होगी, साधारणता नहीं। साधारण कार्य करते भी शक्तिशाली, कर्मयोगी स्थिति का अनुभव करायेंगे। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा–चाहे बच्चों के साथ सब्जी भी काटते रहे, खेल करते रहे लेकिन पर्सनैलिटी सदा आकर्षित करती रही। तो फालो फादर।

12) ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी ‘प्रसन्नता’ है। इस पर्सनैलिटी को अनुभव में लाओ और औरों को भी अनुभवी बनाओ। सदा शुभ-चिन्तन से सम्पन्न रहो, शुभ-चिन्तक बन सर्व को स्नेही, सहयोगी बनाओ। शुभ-चिन्तक आत्मा ही सदा प्रसन्नता की पर्सनैलिटी में रह विश्व के आगे विशेष पर्सनैलिटी वाली बन सकती है।

13) आजकल पर्सनैलिटी वाली आत्मायें सिर्फ नामीग्रामी बनती हैं अर्थात् नाम बुलन्द होता है लेकिन आप रूहानी पर्सनैलिटी वाले सिर्फ नामीग्रामी अर्थात् गायन-योग्य नहीं लेकिन गायन-योग्य के साथ पूजनीय योग्य भी बनते हो। कितने भी बड़े धर्म-क्षेत्र में, राज्य-क्षेत्र में, साइंस के क्षेत्र में पर्सनैलिटी वाले प्रसिद्ध हुए हैं लेकिन आप रूहानी पर्सनैलिटी समान 63 जन्म पूजनीय नहीं बने हैं।

14) जैसे साकार रूप का एक्जैम्पुल देखा, सूरत से हर गुण का प्रत्यक्ष साक्षात्कार कराया, ऐसे फालो फादर करो। कोई कैसी भी अथॉरिटी वाला आये वा कैसे भी मूड वाला आये लेकिन गुणों की पर्सनैलिटी, रूहानियत की पर्सनैलिटी, सर्व-शक्तियों की पर्सनैलिटी के सामने सभी झुक जायेंगे। अपना प्रभाव नहीं डाल सकेंगे।

15) जैसे लौकिक पर्सनैलिटी वाले बाहर की आवाज फैलाने के

निमित्त बनते हैं, ऐसे आप विशेष निमित्त बने हुए सेवाधारी प्यूरिटी की पर्सनैलिटी द्वारा सबको आकर्षित करो। शरीर की पर्सनैलिटी तो आत्माओं को देहभान में लाती है लेकिन आपके प्युरिटी की पर्सनैलिटी देही अभिमानी बनाए बाप के समीप लायेगी।

16) विश्व में कितने भी बड़े-बड़े रायॅल्टी वा पर्सनैलिटी वाले हों लेकिन श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा के आगे विनाशी पर्सनैलिटी वाले स्वयं अनुभव करेंगे कि इनकी यह रूहानी पर्सनैलिटी अति श्रेष्ठ अनोखी है। यह श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मायें सबसे न्यारे, अलौकिक दुनिया के अल्लाह लोग हैं। इसके लिए सिर्फ कर्म-कर्ता नहीं लेकिन योगयुक्त होकर कर्म करो।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 09-03-15 *मधुबन*

"हिम्मत के साथ उमंग-उत्साह हो तो केयरलेस नेचर समाप्त हो जायेगी"

दादी जानकी जी

प्लीज़ सभी प्यार से ओम् शान्ति बोलो और मैं मेरा से छूट जाओ। बाबा कहता है तू मेरा मैं तेरा। तो मैं कौन हूँ, मेरा कौन है? जैसे लाइट आ रही है और माइट खैंच रहे हैं। ऐसे फीलिंग है ना! मैं कह रही हूँ तो लाइट आ गयी माना हल्के हो गये हैं और लाइट लाइट फील करते माइट फील हो रही है। करना क्या है? कराने वाला करा रहा है। बहुत मीठा है। कराने वाला बाबा ऐसा करा रहा है, हम नहीं कर रहे हैं वह करा रहा है। क्या करा रहा है? और हमको क्या करने का है? सर्वगुण सम्पन्न बनना है। हर एक अपने आपको चेक करे, देखे सम्पन्न बनने की घड़ी आ गई। शुक्रिया बाबा आपका, जो कमियां थी, आपने जो हमको शिक्षायें दी हैं, समझाया है, हिम्मत दी है तो हिम्मत से मदद बाबा की है ही। हिम्मत कभी न हार, हिम्मते बच्चे मददे बाप से बहुत सहज हो गया है। राजयोग से रीयल्टी और रॉयल्टी काम कर रही है।

रियलाइजेशन से ज्ञान क्या है! योग क्या है! धारणा क्या है! सेवा क्या हो रही है! चारों ही सबजेक्ट में सहज हो गया है। ऐसे फीलिंग हैं? ज्ञान खुद का, बाबा और ड्रामा का स्पष्ट मिल गया है। सारी मुरली पढ़ो कौन पढ़ा रहा है? कैसे पढ़ा रहा है? क्या पढ़ा रहा है? यह बाबा रोज़ समझाता है। जब सुन रहे हैं या पढ़ रहे हैं, पढ़ाई क्या है? सारा इसेन्स - मनमनाभव। मन कभी तन में वा धन में नहीं है, इससे फ्री हो गया है। मध्याजीभव। जब त्रिमूर्ति का चित्र बना था तो बाबा से पूछा कि बाबा ब्रह्मा विष्णु शंकर में क्या अन्तर दिखाना है! यह एक ही ब्रह्मा सो विष्णु, वही फिर तपस्वीमूर्त शंकर। शिवबाबा तीनों रूप से ब्रह्मा मुख से समझा रहा है और विष्णु सामने खड़ा है। उसी घड़ी अशरीरी स्थिति में शंकर द्वारा विनाश नहीं, पर अशरीरी स्थिति से विकर्म विनाश हो जाते हैं। जब याद में बैठते हैं तो बाबा नित्य नये नये अनुभव कराता है। नुमाशाम के समय का अनुभव तो वन्डरफुल और इज़ी होता है।

अमृतवेले योग के समय का अनुभव भी न्यारा है, मुरली सुनने समय दूसरा अनुभव, बाबा पढ़ा रहा है। जब मैं विदेश में गई तो बाबा से पूछा अमृतवेला मधुबन के टाइम अनुसार यहाँ का दूसरा टाइम है, तो योग कैसे करें? तो बाबा ने कहा जहाँ भी अमृतवेला होगा मैं सामने रहूँगा। तो मेरे मन को शान्ति आई। फिर थर्ड सण्डे के योग का भी ऐसे ही हुआ, मधुबन के समय अनुसार कहाँ आधी रात होता है, कहाँ कुछ तो दादी ने कहा जहाँ भी हो शाम को वहाँ के समय अनुसार 6.30 बजे योग करना है। परन्तु यज्ञ का जो नियम है, टाइम है वो विश्व में कहीं भी हैं, वही टाइम बाबा साथ है। यह मेरा बाबा इतना मीठा है जहाँ भी हम हैं, साथ है। अभी पाण्डव भवन में हो फिर ज्ञानसरोवर में हो, फीलिंग सेम है ना! अच्छी फीलिंग आती है।

4 सबजेक्ट हैं, अपने आपको देखो सबमें अच्छे मार्क्स ले रहे हैं? जो समझते हैं इतना भाग्यवान हूँ जो चारों सबजेक्ट में अच्छी मार्क्स मिल रही हैं, हाथ उठाओ। अन्दर देखो और कोई काम तो है ही नहीं, बाबा बोलूँ या ड्रामा बोलूँ, सबमें ज्ञान ही है। ज्ञान देने वाला मेरा बाप है। आत्मा परमात्मा बिछड़े बहुकाल, अभी सुन्दर मेला कर दिया जो सतगुरू मिला दलाल, अच्छा दलाल है। दलाल कौन है? हमारा बाबा। हमको भी दलाल बना दिया, जो बिछड़ी हुई आत्मायें हैं, अन्दर में थोड़ा भी बुद्धि भटकती है, दिल में कोई न कोई बात अन्दर चली जाती है। दिल साफ हो, सच्ची हो। चारों सबजेक्ट में ध्यान देने से दिल साफ है। दिल सच्ची है। कर्म अच्छे कराने के लिए बाबा करा रहा है, कर्मयोगी हैं। सम्पूर्ण स्थिति बनाने के लिए कोई रूकावट नहीं है। ईश्वर की इतनी मदद है, सिर्फ हिम्मत, उमंग उत्साह हो। हिम्मत है पर उमंग उत्साह नहीं है तो थोड़ा केयरलेस नेचर है, इतना अटेन्शन देना है।

इस बारी हर एक का अनुभव न्यारा, निराला होगा, फीलिंग आयेगी। सेवाधारी जो अच्छी स्थिति में रहने वाले हैं वो कर्म भले कर रहे हैं पर याद और अच्छी है। याद करना नहीं पड़ता है, कोई ऐसे नहीं कहते हैं क्या करें बाबा की याद करने में थोड़ी मेहनत लगती है, अभी यह नहीं कहना चाहिए। अभी इनका ऐसा प्रोग्राम बनाओ जो एक्यूरेट हो, जिससे ऐसा फायदा मिले जो हर सेकण्ड और हर संकल्प सफल हो जाए। निमित्त संकल्प ऐसा काम करे जो वन्डर खायें। ख्वाब में भी बाबा हो ख्याल में भी बाबा हो। यह भी मीठा मीठा ड्रामा है या स्वप्न है, स्वप्न कैसे आते हैं, हरेक अपने आपको देखे कौन-से स्वप्न आते हैं। अच्छा।

दूसरा क्लास 11-3-15

"सारे ज्ञान का सार है अल्फ अल्लाह, बे बादशाही, इसी ज्ञान ने मैं और मेरे से मुक्त कर दिया"

बाबा के दिल में क्या है और मेरे दिल में क्या है और आपके दिल में क्या है वो आपको फीलिंग आती है? क्योंकि दिलाराम को मिले हैं, जिसने हमारे दिल को समझा है, तो हमें भी उसके दिल को समझना चाहिए ना! मन के लिए कहेंगे मन मन्दिर है। मन्दिर में पूज्यनीय क्वालिटी की मूर्ति होती है, कोई मूर्ति का गायन होता है। जैसे गाते हैं – बाबा मैं तुम्हें देखता रहूँ... तो हमारी जो दृष्टि है ना, मन्दिर की मूर्ति के समान काम करेगी। इसमें सच्चाई और हिम्मत के आधार पर बहुत फायदा हुआ है। जरा-सा भी हूँ हाँ नहीं, तेरा मेरा नहीं क्योंकि आपेही पूज्य आपेही पुजारी। हमने बाबा का बनने के पहले मन्दिरों में जाकर पुजारी बन पूजा नहीं की परन्तु देवी देवताओं के लिए रिगार्ड बहुत था। अभी तो देवता बनने वाले ही हैं क्योंकि ब्राह्मण सो देवता बनने की पढ़ाई है। सबको यह भान आता है ना कि हम ही ब्राह्मण सो फरिश्ता सो देवता।

सारे ज्ञान का सार है अल्फ अल्लाह, बे बादशाही - यह है ज्ञान। बाबा मिला सब कुछ मिला, कुछ मिस नहीं है। बाबा ने ऐसा तृप्त आत्मा बना दिया। ज्ञान ऐसा सहज और सरल कर दिया जो डबल विदेशियों को भी यह ज्ञान बहुत अच्छा लग रहा है। जिससे मैं मेरा खत्म हो जाए वो है ज्ञान, ज्ञान वो जिससे डिटैच और लविंग हो जाए। भले सेवा कितनी भी है, सेवा के लिए भी बाबा रोज़ मुरलियों में ध्यान खिंचवाता है। मैं हूँ आत्मा, मेरा है परमात्मा, इन दो शब्दों में बहुत शक्ति भरी हुई है, जिससे यह गैरंटी है कि हम फरिश्ता बन रहे हैं। आजकल जिसको यह भासना आती है कि अभी तो धरती पर पाँव नहीं हैं क्योंकि देवताओं के कदमों की पूजा होती है। अभी हम जो कदम उठाते हैं उसमें ईश्वरीय गुणों की धारणा फरिश्ता बना रही है। निश्चय बुद्धि सो विजयंती। तो अभी बाबा से मिलने के लिए ऐसा कोई मन्त्र यन्त्र तैयार रखना जो सबको फीलिंग हो कि हम फरिश्तों की महफिल में बैठे हैं।

एक बारी बाबा को पूछा बाबा दुनिया वाले पूछते हैं, यह आपका गुरु है क्या? तो उन्हें हम क्या कहें? तो बाबा ने कहा - कहो मेरा बापदादा है। दूसरा लोग हमें नमस्ते कहते तो हम क्या कहें! इस पर बाबा ने कहा ओम् शान्ति कहो। तो मुझे और सहज हो गया, ज्ञान क्या है? ओम् शान्ति। मैं कौन हूँ? मेरा कौन है? मुझे क्या करने का है? मैं क्या करती हूँ, आप सबने देखा है ना! बाबा ने बहुत अच्छा बताया हुआ है कि हमारी चलन कैसी हो, बोल कैसा हो? इस बार सभी का यह अटेन्शन है, ऐसे है? बोल कैसा हो, चेहरा कैसा हो, चलना कैसा हो, आपस में मिलना कैसा हो? वन्डर है।

अभी खाओ टोली, सुनो बोली, बनो होली। बाहर वाले यह सुनते हैं तो कहते हैं यह टोली क्या होती है? अरे, प्रसाद होता है ना। वन्डरफुल। तो आजकल जो कोई आयेगा उन्हें पर्सनल मिलने से भी दिल खुश हो जाती है, मेरा भी दिल यही कहता, क्योंकि यह जो हमारा मिलन होता वो भूलता नहीं है। कभी मिले थे उन्हों को वो याद आयेगा, क्योंकि बाबा के सच्चे बच्चे बनने वालों को देख खुशी होती है ना। मुझे बहुत खुशी है कि भगवान के बच्चे आपस में ऐसे मिले, उसी भासना से मिले, हम भगवान के बच्चे यहाँ क्यों बैठे हैं? मुखड़ा देख लें प्राणी...।

भारत में चाहे विदेश में ज्ञान सुनाना ऐसा है, जैसे सुनाने वाले ने सुनाया है। तो ऐसा सुनाना है जैसे सुनाने वाले ने हमको सुना करके अच्छी तरह से कदम कदम में पदमों की कमाई कराई है। बाप, टीचर, सतगुरू के साथ सभी सम्बन्धों का अनुभव भी करना है।

अभी दिल मन बुद्धि में कोई भी व्यर्थ ख्याल नहीं आता है, यह भगवान की मेहरबानी है मेरे ऊपर, आपके ऊपर भी ऐसी मेहरबानी है वा ऐसी फीलिंग है? कि कोई व्यर्थ नहीं। अच्छा – ओम् शान्ति।

तीसरा क्लास 12-3-15

"बाबा का प्यारा बनना है तो शरीर और सम्बन्ध से न्यारे बनो, लगाव झुकाव टकराव से फ्री रहो"

सारे ज्ञान का सार इस एक ओम् शान्ति शब्द में आ जाता है। पहला ओम् शान्ति मैं कौन? दूसरा ओम् शान्ति मेरा कौन? इसको अच्छी तरह से जानना चाहिए। मैं और मेरा के सिवाए कोई बात नहीं होती है। अब मैं मेरा में चेंज हो गया। पहले हम इस देश के हैं, इस धर्म के हैं, फलां फलां... हैं, कहाँ रहते हैं! अभी कितनी चेंज हो गयी। जब मैं बोलती हूँ मैं आत्मा हूँ तो शान्त हूँ, शान्ति भी ऐसी जो बाबा का बनके रहें, अपार सुख लेते रहें। ज्ञान का सार है सोल-कॉन्सेस रहना

और बॉडी-कॉन्सेस खत्म करना। देह-अभिमान में देह, देह के सम्बन्धियों से लगाव या झुकाव या टकराव से फ्री हो गये हैं। जो समझते हैं बाबा का बनने से देहधारियों से, पुराने सम्बन्ध, स्वभाव, संस्कार से फ्री हो गये हैं वो हाथ उठाओ। थोड़ा भी लगाव है तो यहाँ भी शान्ति नहीं मिलेगी। बाबा ने इतनी शान्ति दी है, जिस शान्ति में जिस समय जिससे मिलें या जो हमारे से मिले, कोई भी देश वा कोई भी धर्म का हो, कोई भी भाषा वाला हो, समझ जाता है। ज्ञान से अभी ऐसी पालना हो रही है जिससे बहुत सुख मिलता है।

मधुबन में बाबा के साथ हाथ में मुरली लेके बैठे हैं तो अभी तो सब ठीक हैं ना, खुश हैं ना! खाना पीना ठीक है ना। कोई दु:ख की बात नहीं है क्योंकि यहाँ तो जैसा अन्न वैसा मन, जैसा संग वैसा रंग, जैसा पानी वैसी वाणी। दुनिया में तो अभी बोतल का पानी पीते हैं, पहले तो बहती गंगा का पानी पीते थे। बाबा के जमाने में तो शुद्ध आहारी थे। बनाने वाले भी याद में, तो खाने वाले को भी याद आयेगा। बनाने वाले को भी बनाने में बहुत खुशी होती है, तो खाने वाले के ऊपर भी उसका असर पड़ता है। पहले साकार बाबा के दिनों में 300-400 थे, फिर हजारों हुए, अभी लाखों हो गये हैं। ब्रह्माबाबा ने मुख से ज्ञान सुनाया और मुख में अन्न शुद्ध खिलाया तभी हमारी ऐसी जीवन बनी है। मैं समझती हूँ जिस दिन से बाबा मिला दोनों बातें बदल गई।

शरीर से न्यारे, सम्बन्ध से भी न्यारे और बाबा के प्यारे बनना है। जहाँ मन है वहाँ तन से भी सेवा करके जीवन सफल कर रहे हैं। अगर सेवा न करें तो चारों सबजेक्ट कैसे कवर होंगे! प्रदर्शनी समझाने की सेवा भी बहुत अच्छी है, पर जितना ज्ञान मैं मेरे का स्पष्ट है, यह 5 तत्वों की दुनिया है, 5 तत्वों का शरीर है। सब कुछ 5 तत्वों का है। आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी यह 5 तत्व हैं। यह पाँचों तत्व भी सुख दे रहे हैं। साइंस इस पाँच तत्वों की दुनिया में विनाश का काम कर रही है। विनाश कैसे जल्दी हो जाए, वो तैयारियां कर रहे हैं, यह भी इशारा मिल रहा है। हम तो साइलेंस में बाबा के संग से सतोप्रधान बन रहे हैं। बाबा का बच्चा बनने से अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूल रहे हैं। अतीन्द्रिय सुख माना यह इन्द्रियाँ हमारे वश में हैं, चंचल नहीं होती है। यह खाऊं, यह खाऊं पेट में बलाऊं... कुछ नहीं चाहिए, यह चाहिए वो चाहिए से छूट गये।

जितना ज्ञान की गहराई में जाओ उतना योग लग जाता है। यह नेचुरल है। बाबा टीचर के रूप में बहुत अच्छा लगता है। बाबा जब सुनाता था तो मुझे कहता था जो सुना वो लिखो। सुबह से रात्रि तक नई नई बातें सुनाता था। चलते-फिरते जो सुबह को शुरू किया वो रात तक गहराई में 30 पेज मुरली हो जाती थी। बाबा से सुनते जाओ, मुरली तो अच्छी लगती थी। तो अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होने लगता था। नेचुरली टॉक नो इविल, सी नो इविल, हियर नो इविल, थींक नो इविल, डू नो इविल, मुरली सुनने से सोचना ही चेंज हो जाता है, क्या सोचें? अभी एक मिनट के अन्दर आप अपने आपको साक्षी हो करके देखो, कौन-सा सोच विचार है? शान्ति में रहने वाला अधिक सोचता नहीं है, सोच विचार नहीं है तो रूखे रूखे भी नहीं हैं, बल्कि खुशी में हैं। शान्त माना कुछ नहीं करना नहीं, पर सब कुछ करना। कर्मेन्द्रियां काम करें तो तन अच्छा रहता है। मन भी अच्छा तन भी अच्छा, धन भी हम क्या करेंगे? बाबा जब समर्पण हुआ, उस समय तो नोट नहीं होते थे, चांदी सोने के रूपये या मुहरें होती थी, अभी सौ का नोट है तो 10 का भी नोट है। पर हम उसके लोभी नहीं हैं, बाबा ने कभी उन्हें हाथ भी नहीं लगाया। हम अपनी जीवन हीरे जैसी बना रहे हैं और जो धन सफल हो रहा है वो भी हीरे समान बन रहा है।

इतना बड़ा यज्ञ कैसे चल रहा है, कौन चला रहा है? चला नहीं रहे हैं पर करनकरावनहार स्वामी सगल घटाके अन्तर्यामी... उनको टच होता है कैसे सफल करना है। शरीर छोड़े तो कैसे? कोई याद न आवे। हमारी लाइफ में कितनी चेंज है, इसलिए सुखी बहुत हैं। दुनिया में दु:ख बहुत है इसलिए मन से भी रोते रहते हैं और हमें देखो कितने खुश हैं! माँ बाप को खुशी बहुत है, बच्चे अच्छे बन गये हैं। तो हमारे यह चारों सबजेक्ट सिर्फ लिखने पढ़ने वाले नहीं हैं, पर अनुभव करके अनुभव कराने का है। बाबा देखता है कौन बच्चे अनुभव करते हैं, अनुभव से औरों की जीवन भी सफल करते हैं। कौन हैं ऐसे जो खुद की जीवन सफल की है, निमित्त बन करके, मिसाल बन करके जो औरों के लिए भी प्रेरणा का श्रोत बने हैं? जिससे उनको बनना इज़ी हो जाए। तो हमारे सुखदाई जीवन को देख कितनों के जीवन में दु:ख-दर्द का नाम-निशान न रहे।

याद में बैठते हैं तो साइलेंस में मन और तन दोनों शान्त हो जाते हैं। खुशी में कोई न कोई आवाज़ निकल आयेगा, पर बाबा की याद में जब होते हैं तब कोई आवाज़ नहीं आयेगा। देह से न्यारी आत्मा हो जाने से सच्ची शान्ति आ जाती है। भले ही इन कानों से आत्मा का ज्ञान सुनते हैं, पर जब वो ज्ञान बुद्धि में बैठता है तब आत्मा अपने स्वधर्म में स्थित हो जाने से सम्बन्ध सम्पर्क में भी सच्चाई आती है। हमारे पास जितनी सच्चाई आती जायेगी उतनी सुख-शान्ति आती जायेगी। तो साइलेंस माना सर्व गुणों में सम्पन्न रहना।

जैसे गुल्जार दादी से जब भी मिलते हैं तो बहुत साइलेंस और हैपीनेस का अनुभव होता है क्योंकि सच्चाई में बहुत शक्ति होती है फिर ज्यादा बोलना नहीं पड़ता है। आप में बाप, बाप में आप दिखाई पड़ते हैं। ज्ञानवान के साथ गुणवान बनना - इसमें मेहनत है। ज्ञान तो मुख से सुनाना होता है, यह सहज

है, पर गुणों को व्यवहार से दिखाना होता है, यह थोड़ा मुश्किल काम है। गुणवान जो होगा वो सदा ही उमंग में, खुशी में रहेगा, उसके संग से गुणदान स्वत: ही होता रहेगा।

अभी जो सुना समझा, भासना आयी, हम सब आत्मायें बाबा के बच्चे हैं! तो बहुत खुशी हो रही है ना! इतने बड़े परिवार में यह कहने में आता है कि फलां फलां देशों से आये हैं, पर हैं तो सब एक ही देश के, एक ही घर के और एक ही परिवार के। मैं एक आत्मा हूँ, मेरा बाबा है तो सर्व शक्तियाँ आ जाती हैं। वन्डरफुल बाबा फिर वन्डरफुल परिवार!

गुल्जार दादी जी - 15-7-06

"ज्वालामुखी योग सर्व शक्तियों से सम्पन्न है, उसमें सेवा का स्वरूप भी इमर्ज है"

चार ही सबजेक्ट में हर एक परिवर्तन का लक्ष्य लेकर ज्वालामुखी योग तपस्या कर रहे हो। चारों ही सबजेक्ट स्वरूप में लाने हैं। ज्ञान केवल वर्णन के लिए नहीं है लेकिन उसे स्वरूप में लाना है। स्वरूप में लाना अर्थात् जो भी हम बोल बोलें, कर्म करें, संकल्प करें वो समझ करके करें, उसका फायदा नुकसान आदि ध्यान में रखकर करें। ऐसे योग की भी बाबा जो भिन्न-भिन्न स्टेज सुनाते हैं, तो योग को समय अनुसार कार्य में लगाना, माना उस स्थिति में स्थित होना, यह है इस सब्जेक्ट को प्रैक्टिकल में लाना। ऐसे ही धारणायें हमारी चलन और चेहरे से दिखाई दें। जैसे ब्रह्मा बाबा के चेहरे से लगता था कि विशेष आत्मा है। सारे झुण्ड में भी बाबा अगर खड़ा हो तो न्यारा लगता था। सेवा की सबजेक्ट में भी बाबा लास्ट तक अखण्ड सेवाधारी रहे। तो हम भी चार ही सब्जेक्ट को प्रैक्टिकल में लायें।

याद की पावरफुल स्टेज है ज्वालामुखी स्टेज, इसमें स्वयं की भी स्थिति है और सेवा की भी क्योंकि लाइट हाउस चारों ओर रास्ता दिखाता है। ज्वालामुखी स्थिति का अर्थ है - हम आत्मा भी लाइट हैं, बाबा भी लाइट है। नॉलेज को भी लाइट कहा जाता है। तो लाइट हाउस ज्ञान-स्वरूप स्थिति है। उस स्थिति में जो सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम की प्राप्ति होती है वह सर्व आत्माओं को अपनी स्थिति द्वारा अनुभव कराना, ज्वालामुखी योग का अर्थ है - उस स्वरूप में स्थित होकर सेवा करना। वो स्वरूप जब इमर्ज होता है तो आटोमेटिक लाइट पहुँचती है यानि वायुमण्डल बनता है, उनको वायब्रेशन पहुंचता है। माइट हाउस माना जिसको जो शक्ति चाहिए अपने आप मिलेगी। ज्वालामुखी योग के समय यह स्मृति में नहीं आयेगा कि इसको कौन सी शक्ति चाहिए, उसको कौन सी शक्ति चाहिए। जब हम मास्टर सर्वशक्तिवान बनकर बैठते हैं तो जिसको जिस शक्ति की आवश्यकता होती है उसको वो पहुंचती है। जैसे सूर्य उदय होता है, सूर्य की किरणें अपना काम करती हैं। एक ही टाइम पर कहाँ पानी बरसाती हैं, कहाँ सुखाती हैं, कहाँ शक्ति देती हैं, कहाँ रोशनी देती हैं। आटोमेटिकली होता है, सूर्य को सोचना नहीं पड़ता है। ऐसे ही जब हम आदि-अनादि स्वरूप में स्थित हो जाते हैं तो आटोमेटिक हमारे से जिस आत्मा को जो चाहिए वो प्राप्त हो जाता है।

यह भी योग ही है लेकिन पावरफुल है। वास्तव में बीजरूप की स्थिति भी पावरफुल है, लेकिन उसमें सर्व शक्तियाँ, गुण बीज के रूप में समाये रहते हैं और ज्वालामुखी योग में सेवा का इमर्ज रूप है। सर्व शक्तियाँ इमर्ज हैं, जो जिसको चाहिए वो पहुंच रहा है। है वही लेकिन स्टेज भिन्न है।

हम अपनी धारणाओं से योग की भिन्न-भिन्न स्टेज का अनुभव करते रहें। मनन करने की शक्ति भी योग है, रुहरिहान करेंगे तो भी बाबा से ही करेंगे। याद तो हर स्टेज में बाबा की ही है। लेकिन हरेक का समय प्रति समय मूड भी होता है और एक जैसा करने से कभी बोर भी हो जाते हैं इसलिए बाबा ने विस्तार के रूप में बना के दिया है। अच्छा यह नहीं तो यह करो। मतलब अन्दर रहो, बाहर नहीं जाओ। वेस्ट थॉट तो नुकसान करता है ना। तो मन-बुद्धि को बिजी रखने के लिए बाबा ने भिन्न-भिन्न स्टेज विस्तार में बताई हैं।

ज्वालामुखी योग माना अपना अनादि स्वरूप स्मृति में इमर्ज रहे। मेरा अनादि स्वरूप लाइट है। लाइट का अर्थ हल्का और प्रकाश है। जिस समय हम लाइट हाउस रूप स्थिति में बैठते हैं उस समय हम नेचरल लाइट बन जाते हैं। अगर किसी कारण से आप एकदम ज्योति रूप में स्थित नहीं हो सकते हो तो कर्म करते फरिश्ते रूप की लाइट का शरीर धारण करो। ये पांच तत्वों के बजाय, लाइट का शरीर है, उस रूप में स्थित रहो। यही ज्वालामुखी योग की विधि है।

इसके लिए सिर्फ ''मैं और मेरा'' का ध्यान रखना है। हम सब सर्विस के निमित्त हैं लेकिन निमित्त भाव में रहते हैं? निमित्त भाव हल्का बनाता है। अगर मेरा और मैं आ जाता है तो यही बोझ है। इससे हल्का होने की विधि बाबा ने बहुत अच्छी सिखाई है - जब भी मैं कहो, तो उसमें मैं आत्मा एड करो और जब मेरा शब्द बोलते हो तो उसमें मेरे के साथ मेरा बाबा एड करो। मैं भले

कहो, उसमें आत्मा याद आ जाये, मेरा कहो तो बाबा याद आ जाये। तो पहले यह चेक करने से ज्वालामुखी योग द्वारा स्व का परिवर्तन कर सकते हैं।

ज्वालामुखी माना पावरफुल योग जिससे पुराने संस्कार जलकर भस्म हो सकते हैं। आग तेज होगी तो जलकर नाम-निशान खत्म होगा। अगर आग ढीली है तो आधा जलेगा, आधा रह जायेगा। ज्वालामुखी योग माना पावरफुल, लाइट-माइट, शक्तियाँ, सुख शान्ति, आनन्द सब इमर्ज हों, उससे वायब्रेशन फैलें।

ऐसी स्थिति बनाने के लिए कुछ बातों की चेकिंग जरूरी है, अमृतवेले से लेकर जो बाबा के डायरेक्शन हैं, श्रीमत है, उस श्रीमत प्रमाण हम कहाँ तक चलते हैं? योग के लिए भी टाइम फिक्स हो। रोज़ का अभ्यास जरूरी है। मुरली सुनते ऐसा अनुभव हो कि बाबा पर्सनल मेरे से बात कर रहा है। फिर हर कर्म करते दफ्तर, सेन्टर सब निमित्त भाव से सम्भालना है। निमित्त भाव, निर्मान भाव और निर्मल वाणी ये तीन बातें हमारे हर कर्म में होनी चाहिए। यह श्रीमत बाबा ने दे दी है। फिर अगर सेवा करो तो सेवा में भी खुद पहले उस स्वरूप में स्थित होकर उसको अनुभव कराओ। सेवा के प्रति भी बाबा ने ये अनुभव का इशारा दिया है, दूसरा निमित्त बनकर निर्मल वाणी से सेवा करनी है तभी हम ज्वालामुखी योग को प्रैक्टिकल में ला सकेंगे। फिर हम एक ही स्थान पर बैठकर लाइट-माइट हाउस बनके सारे विश्व की आत्माओं को शक्ति दे सकते हैं। यह मन्सा सेवा ही है, सिर्फ पावरफुल योग हो इसलिए बाबा ने ज्वालामुखी योग कहा है। जिसमें और कोई बात नहीं हो, कोई भी संस्कार हमारा इमर्ज न हो। तो ज्वालामुखी योग से स्व और सेवा में डबल फायदा हो जायेगा।

प्रश्न:- आप जब फरिश्ता स्वरूप की बॉडी में बाबा से मिलती हैं, तो उस समय की फीलिंग क्या होती है?

उत्तर:- फरिश्ता माना लाइट, जब हम वतन में जाते हैं तो बॉडी पूरी ही दिखाई देती है, नैन चैन वही होते हैं लेकिन उस सूक्ष्म फरिश्ते स्वरूप को अगर टच करेंगे तो उसमें हड्डी मास नहीं होता है, लाइट की ही बॉडी है। अनुभव तो साकार जैसा ही होता है। लेकिन यह दिव्य दृष्टि से होता है। आप जब मिलन मनाते हैं तो वह दिव्य बुद्धि द्वारा मनाते हैं। इसमें थोड़ा अन्तर तो रहता ही है। वहाँ जब हम फरिश्ते रूप में हो जाते हैं तो मूवी की भाषा भी समझना सहज हो जाता है।

फरिश्ता रूप बाबा इसीलिए कहता है, क्योंकि बॉडी कान्सेस होने से कई विकार पैदा हो जाते हैं। लाइट की बाडी में अगर हम चलते हैं तो कोई भी प्रकार के वायुमण्डल, प्रकृति या विकारों से परे हैं। फरिश्ता स्वरूप में रहने से हमको आटोमेटिक सूक्ष्म लोक की स्मृति रहती है।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

“रुहानियत की शक्ति से एकरस स्थिति बनाओ”

1. एकरस स्थिति बनाने के लिए देखते हुए भी न देखो - यह अच्छी साधना है। कोई कहते देखते हुए भी न देखें फिर भी दिखाई तो पड़ता है। परन्तु इसका अभ्यास करने बिना एकरस स्थिति बन नहीं सकती। जिसे घर की याद होगी, उपराम वृत्ति होगी - वह देखते हुए भी नहीं देखेंगे। जिसके अन्दर पुरानी दुनिया से सन्यास की वृत्ति होगी, जो अन्दर से चेकिंग करते मेरा कहीं लगाव झुकाव तो नहीं है, वह देखते हुए नहीं देखेंगे। किसी के तरफ रग जाना ही नुकसान है। बगुले के तरफ रग है तो वह खींचकर अपने समान बनायेगा। यदि दिखाई पड़ता है – यह हंस है और रग गई तो भी फरिश्ता नहीं बन सकते। जब तक रीयल रुहानियत की खुशबू नहीं आई है तब तक एकरस स्थिति नहीं बन सकती। रुहानियत का रस सुख, शान्ति देने वाला रस है। रग है तो खुद भी उस रस में नहीं रह सकता है, जहाँ रग जाती है उसकी खींच होगी, बाबा से रुहानी रस खींच नहीं सकता। जैसे बहुत सूक्ष्म माँ के गर्भ में नाभी से बच्चे को खाना मिलता है। इतना सूक्ष्म सम्बन्ध अगर मात-पिता से है, तो मात-पिता की सूक्ष्म शक्ति उसे जन्म देने वा पालना देने में मदद करती है। जिन्हें वह रस मिला है उनकी रग कहाँ जा नहीं सकती। यह रस अनुभव किये बिना ईश्वरीय सन्तान का नशा नहीं चढ़ेगा। शूद्र से ब्राह्मण बन गये बहुत अच्छा, पर ब्राह्मणों में भी नम्बरवार हैं। ब्राह्मण एक धामा खाने वाले होते हैं, गृहस्थी के हाथ का भी खा लेते हैं। दूसरे पुष्करणी ब्राह्मण होते हैं, कोई रास्ता दिखाने वाले पण्डे होते हैं, कोई जन्मपत्री वाचने वाले होते। कोई किसकी ग्रहचारी हटाने वाले, किसी की सगाई कराने वाले होते। जन्म-मृत्यु, शादी किसी भी कार्य में ब्राह्मण के बिना काम नहीं चल सकता। तो देखना है हम ब्राह्मण किस योग्य हैं? कोई करनीघोर भी होते हैं, मरे हुए का कपड़ा पहन लेंगे। जैसे भूखे ब्राह्मण हैं। जैसा ब्राह्मण होता है उसको वैसा आफर करते हैं। उसे वैसी दक्षिणा वैसा खाना मिलता है। अपने को देखना है – हम ब्रह्मा मुख वंशावली हैं, तो मेरी स्थिति कैसी है? पुरानी दुनिया से मुख मोड़ने में भी जो युद्ध करते वो सच्चे ब्राह्मण नहीं हैं।

2. बाबा का बच्चा बनते ही अपनी स्थिति पर ध्यान हो। हमारी

स्थिति कोई हिला नहीं सकता, नीचे ऊपर नहीं कर सकता। कितने भी विघ्न आयें, एक बल एक भरोसे के आधार पर स्थिति बहुत अच्छी बनती है। जिस आधार से स्थिति अच्छी बनती है वो लिस्ट अपने पास रखनी चाहिए। जिस बात का लक्ष्य रखकर अनुभव करना हो उसकी लिस्ट बनानी चाहिए। समझो मुझे एकरस स्थिति बनानी हो तो किस-किस बात की लिस्ट बनाऊं? पहले अन्तर्मुख रहूँ। बाह्यमुखता घड़ी-घड़ी खींचे नहीं फिर एकाग्रचित रहने के आदती बनते जायेंगे। एकाग्रचित बनने के लिए समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति, सहनशक्ति चाहिए। कोई भी शक्ति की कमी है तो एकाग्रचित नहीं बन सकते। सहनशक्ति की कमी एकाग्रचित बनने नहीं देती। विस्तार से बोलने वाला, विस्तार से सोचने वाला एकाग्रचित नहीं बन सकता। अगर समाने की शक्ति नहीं है तो मास्टर ज्ञान सागर नहीं बन सकते। एकाग्रचित बनने के लिए सहनशक्ति, समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति ऐसी हो जो बीती को बीती कर दे। पास्ट को पास्ट कर दे, फुलस्टाप लगा दे। एकाग्र होकर बाबा को याद करना शुरु कर दे। कुछ भी हो रहा है - रिंचक मात्र भी हलचल न हो। क्या हुआ, कैसे हुआ, क्यों हुआ, यह न हो। फुलस्टाप देने की जब तक आदत नहीं है तब तक एकाग्रचित नहीं बन सकते। एकाग्रचित नहीं बन सकते तो एकरस स्थिति दूर हो जाती है। एकाग्रचित रहने वाला बाबा से गुप्त शक्ति ले सकता है। फिर ऐसे फील होगा कि यह शक्ति आत्मा को चला रही है। फालतू बातों में समय गंवाना छोड़ दो। बाबा से लिंक जुटी हुई हो तब आनन्दमय स्थिति बन सकती है। एकरस स्थिति बनाना माना आनन्दमय स्थिति को पाना, उस आनन्द में सुख, शान्ति, प्रेम सब समाया हुआ है। अलग नहीं है। वह आनन्दमय स्थिति मात-पिता के समान बनने में मदद करती है। तो सब बातों को छोड़ फालो फादर करो। जो एक बाबा को देखता है उसे और कुछ दिखाई नहीं पड़ता। जो बाबा को फालो करता है उसके हर कदम में कल्याण है। हम कितने भाग्यशाली हैं जो कल्याणकारी बाबा के कदमों पर कदम हैं। देवताओं के कदमों में पदम इसीलिए दिखाये जाते हैं क्योंकि उन्होंने हर कदम पर फालो फादर किया है।

3. बाबा ने हम बच्चों को याद दिलाया है - बच्चे यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है, तुम देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूलो। बाबा ने हमें यज्ञ सेवाधारी बनाया तो हम ब्राह्मण बनें। जो ब्राह्मण नहीं बनते वो देवता नहीं बन सकते। बाबा ने गोद में लिया, यज्ञ रचा सेवा कराने के लिए। बाबा का बच्चा बनने से, सेवाधारी बनने से ब्राह्मण बन गये। जैसे शिवबाबा का नाम गुणवाचक है, ऐसे हमारे गुण कर्तव्य पर नाम मिला ब्राह्मण। हमारा बाप वृक्षपति है, कल्याणकारी है, जिसे यह याद है उसके ऊपर ग्रहचारी आ नहीं सकती। गृहचारी किस पर आती है? धन, सम्बन्ध और शरीर पर। जब वृक्षपति बाप के बच्चे बने तो शरीर की गृहचारी भी चली गई, सम्बन्ध में सुख है, झगड़ा हो नहीं सकता। सम्पत्ति में भी किसके सामने हाथ नहीं फैला सकते। दाता के बच्चे हैं। ब्रहस्पति की दशा है। वृक्षपति बाप के बच्चों को सुख देखना है जरूर। मैं वृक्षपति बाप का बेटा हूँ – यह वरदान सदा याद रहे। अगर ब्रह्मा मुखवंशावली हूँ तो सबकी जन्मपत्री वाचने, देखने वाला हूँ, सफलता का सितारा हूँ – हमारे ऊपर गृहचारी आ नहीं सकती। अगर आती है तो हटा देनी चाहिए, हट सकती है। जो अच्छे ऊंचे ब्राह्मण हैं वो औरों की भी ग्रहचारी हटा देते हैं। नीच ब्राह्मण जादू मंत्र डालने वाले होते हैं। वो हैं जैलसी वाले ब्राह्मण। किसी को सुखी देख सहन नहीं कर सकते। कोई ऐसे भी हैं जो एक दो से कॉम्पीटीशन करते रहते, किसी से भेंट करना, किसी की क्रिटिसाइज़ करना – यह ऊंचे ब्राह्मणों का धंधा नहीं है। उनकी एकरस स्थिति बन नहीं सकती। उन्हें अन्दर से सबकी दुआयें मिल नहीं सकती। अगर स्थिति अच्छी है तो सबकी दुआयें मिलेंगी। वो किसी को भी न देख एक ईश्वर को देखेगा। न पुरानी दुनिया को देखेगा, न यहाँ किसी को देखेगा। क्या हो रहा है, कैसे हो रहा है, हमको क्या करना है! क्या मुझे चेकिंग करने की ड्युटी मिली हुई है? हरेक को ड्युटी मिली है – अपने आपको सम्भालने की। जो अपने आपको नहीं सम्भालता उसे बाबा कोई ड्युटी नहीं देता। तो मुख्य बात है अपनी स्थिति को अन्दर मजबूत बनाना है। सयाना वह है जो अन्दर की लगन में मगन रहे। लगन को कम न करे।

4. बीती बातों का ख्याल कर रोना नहीं है, अगर रोते हैं तो एकरस स्थिति नहीं है। स्थिति नीचे ऊपर तब होती है जब हमारी मर्जी से काम नहीं होता है। मेरी मर्जी कहाँ से आई! हमारी सदा शुभ भावना, शुभ कामना रहे। ड्रामा की नूँध है। हम कभी लड़ाई-झगड़ा कर नहीं सकते क्योंकि हमें अपकारियों पर उपकार करना है, मुख चलाना नहीं है। अगर मूड भी बदल जाता है तो यह भी ठीक नहीं है। अब तक भी इस प्रकार के संस्कार हैं तो ठीक नहीं। इसके लिए जितना चेक करेंगे उतना अच्छा है। चेक वह कर सकता है जो अन्तर्मुखी है, जिसे एकरस स्थिति बनाने का लक्ष्य है। किसी भी बात को न देख अपने को देखो, बाबा को देखो, जो बाबा को नहीं देखता उसे बाबा भी नहीं देखता। जो अपने को चेक करता है उसे फट से पता चलता है मेरे में क्या कमी है। जो अपनी कमी को स्वीकार करता है बाबा उसे इशारा देता है, किसी के द्वारा दे देगा या स्वप्न में दे देगा। हमको कम्पलीट बनना है, बाबा को बनाना है। तो बाबा कोई कमी रहने नहीं देगा। अगर मुझे अपने में कोई कमी नहीं रखनी है तो कमी का पता जरूर चलेगा। सम्पूर्ण देवता बनने वाले बच्चे इशारे से समझते हैं। जिसको एकरस स्थिति बनानी है वह ईशारे से समझ जायेंगे। विस्तार से बताने की जरूरत नहीं है। तो मुख्य बात है सब बातों को छोड़ अन्दर से सन्यास वृत्ति रखो। सबसे बड़े सन्यासी तो हम हैं। सारी दुनिया को छोड़कर जा रहे हैं, इससे कोई भी प्रीत नहीं। अच्छा - ओम् शान्ति।